Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
October to December 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LII (52), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

21वीं सदी में मूल्य शिक्षा का महत्त्व और आवश्यकता

बीरेंद्र सिंह कुशवाह*

* सहायक प्राध्यापक (इतिहास) शास. महाविद्यालय, बदरवास, शिवपुरी (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना –शिक्षा पूर्ण मानव क्षमता को प्राप्त करने एवं न्याय संगत और न्यायपूर्ण समाज के विकास और राष्ट्रीय उत्थान में बढ़ोत्तरी के लिए मुलभुत आवश्यकता है, गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा तथा सार्वभौमिक पहुँच प्रदान करना, वैश्विक मंच पर सामाजिक न्याय और समानता, वैज्ञानिक उन्नति, राष्ट्रीय एकीकरण तथा सांस्कृतिक संरक्षण के सन्दर्भ में भारत की सतत प्रगति और आर्थिक विकास की कुंजी है। सार्वभौमिक उच्च स्तरीय शिक्षा का उचित माध्यम है, जिससे देश की समृद्ध प्रतिभा और संसाधनों का सर्वोत्तम विकास एवं संवर्धन, व्यक्ति, समाज,राष्ट्र, और विश्व के कल्याण के लिए किया जा सकता है स अगले दशक में भारत विश्व का सबसे युवा जनसंख्या वाला देश होगा और इन युवाओं को उच्चतर गुणवत्तायुक्त शैक्षिक अवसर उपलब्ध कराने पर ही भारत का भविष्य निर्भर करेगा।

21वीं सदी के 20वें वर्ष में नई शिक्षा नीति आई है, भारत में सर्वप्रथम 1968 में नई शिक्षा नीति बनाई गयी थी उसके बाद 1986 में बनाई गयी जिसके बाद नई शिक्षा नीति को 1992 में संशोधित किया गया, लगभग 34 वर्षों बाद 2020 में पुन: नई शिक्षा नीति बनी है। डॉ. के. कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में शिक्षा नीति को लेकर बनाई गई समिति का गठन किया गया था जो मई 2019 में कस्तूरीरंगन समिति ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति का नया रूप सरकार के समक्ष प्रस्तुत किया, वर्ष 1986 के बाद भारत में यह तीसरी शिक्षा नीति है, जो भारत के अनेक राज्यों के साथ साथ मध्य प्रदेश में भी 2021से लागू हो गई है स जिसके तहत शिक्षा नीति में बहुत बदलाव किये गये हैं।

प्रस्तुत शोध–पत्र '21वीं सदी में मूल्य शिक्षा का महत्त्व और आवश्यकता' के सम्बन्ध में एक प्रयास है जो नई शिक्षा नीति में उपयोगी साबित होगी।

मूल्य शिक्षा का महत्व – मूल्य शिक्षा हमारे अंदर नैतिक मूल्यों का विकास करती है। ये हमारे जीवन में सीखने के साथ –साथ हमारे व्यक्तित्व विकास में भी सहायता करती है स अमेरिकी मनोवैज्ञानिक लोरेंस कोहलबर्ग का मानना था कि बच्चों को एक ऐसे माहौल में रहने की जरुरत है जो दिन – प्रतिदिन के संघर्षो की खुली और सार्वजनिक चर्चा के लिए अनुमति देता है। Value Education की महत्ता हमारे परसनालिटी डेवलपमेंट में सहायक है तथा विद्यार्थी के गुणों में विकास करता है। इतना ही नहीं यह हमारे अंदर समय के महत्व को समझने की क्षमता को विकसित करता है। खेल के महत्व को समझना भी मूल्य शिक्षा को समझने तथा रोचक ढंग से व्यक्तित्व के विकास में प्रमुख भूमिका निभाता है।

प्रस्तुत शोध–पत्र –21वीं सदी में मूल्य शिक्षा का महत्व और आवश्यकता के सम्बन्ध में निम्न विन्दुओं का विश्लेषण करता है : –

1. मूल्य शिक्षा क्या है?
2. मूल्य शिक्षा की परिभाषाएं?
3. इसके क्या फायदे हैं?
4. मूल्य शिक्षा के उद्देश्य/आवश्यकता
5. मूल्य शिक्षा में शिक्षक की भूमिका
6. जीवन में मूल्य शिक्षा का महत्व
7. मूल्य शिक्षा की विशेषताएं
8. उच्च/उच्चतर शिक्षा में मूल्य शिक्षा का महत्व

इस शोध– पत्र में मुख्य रूप से –मूल्य शिक्षा क्या है, मूल्य शिक्षा की परिभाषा, फायदे, महत्व एवं उदेश्य/आवश्यकता, शिक्षक की भूमिका आदि पर विवरण प्रस्तुत है –

मूल्य शिक्षा क्या है ?

मूल्य शिक्षा व्यक्तियों के व्यक्तित्व विकास पर जोर देती है ताकि उनका भविष्य संवर सके एवं कठिन से कठिन परिस्थितियों से आसानी से निपटा जा सके स यह बच्चों को ढालता है, ताकि वे अपने सामाजिक, नैतिक, और लोकतान्त्रिक कर्तव्यों को कुशलतापूर्वक संभालते हुए बदलते वातावरण से जुड़ सकें।

1. मूल्य शिक्षा की महत्ता शारीरिक और भावनात्मक पहलुओं को विकसित करता है।
2. यह आपको ढंग सिखाता है और भाई चारे की भावना विकसित करता है।
3. यह देशभक्ति की भावना पैदा करता है।
4. मूल्य शिक्षा धार्मिक सहिष्णुता को भी विकसित करता है।

मूल्य शिक्षा की परिभाषाएं – मूल्य शिक्षा को लेकर अनेक प्रकार की परिभाषाएं दी गयी हैं जो निम्नानुसार है :

1. लेविन (1964) के अनुसार 'लालच की भावना में उच्चतम रूकावट सकारात्मक रूप में शारीरिक दंड की प्रक्रिया से है और नकारात्मक रूप से विचार और तर्कशक्ति की प्रक्रिया है।'
2. गुरुराजा (1978)के अनुसन्धान में पाया कि 'नैतिक मूल्यों का ज्ञान, अभिप्राय पूर्णता से प्रभावित होता है।'

मूल्य शिक्षा के फायदे :

मूल्य शिक्षा के निम्नलिखित फायदे हैं :

1. यह जीवन के लक्ष्यों को प्राप्त करने और सफल होने के लिए आवश्यक किरदारों को विकसित करने में मदद करता है।
2. यह आपकी पर्सनालिटी को आकर देता है, आपको जीवन और उसके संघर्षो के प्रति विनम्र और आशावादी बनाता है।
3. यह विद्यार्थियों को उनके जीवन के उद्देश्य जानने में मदद करता है, और उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए सही रास्ता चुनने में सहायता करता है।

मूल्य शिक्षा को एक अलग अनुशासन के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए, किन्तु शिक्षा प्रणाली के अंदर सम्मिलित करना चाहिए। केवल समस्याओं को हल करना उद्देश्य नहीं होना चाहिए, इसके पीछे के स्पष्ट कारण और लक्ष्य के बारे में भी सोचा जाना चाहिए।

अत: -21वीं सदी में मूल्य शिक्षा का महत्व और आवश्यकता को प्रदर्शित करने वाले निम्नलिखित बिंदु है :

1. मूल्य शिक्षा का महत्व कठिन परिस्थितियों में सही निर्णय लेने में मदद करता है, जिससे निर्णय लेने की क्षमता में सुधार होता है।
2. उम्र के साथ जिम्मेदारियों की एक विस्तृत श्रृंखला आती है, यह कई बार अर्थहीनता की भावना को विकसित कर सकता है और मानसिक स्वास्थ्य सम्बन्धी विकारों, मध्य कैरियर संकट और किसी के जीवन के साथ बढ़ते असंतोष को जन्म दे सकता है। मूल्य शिक्षा का उद्देश्य कुछ हद तक लोगों के जीवन में शून्य को भरना है।
3. मूल्य शिक्षा का महत्व जगाने और मूल्यों तथा हितों को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह आगे कौशल विकास में मदद करता है सजब लोग समाज और उनके जीवन में मूल्य शिक्षा का अध्ययन करते हैं तो वे अपने लक्ष्यों और जुनून के प्रति अधिक उत्साहित एवं बंधे हुए होते हैं। इससे जागरूकता का विकास होता है स जिसके परिणामस्वरूप विचारशील और पूर्ण निर्णय लेते हैं।
4. मूल्य शिक्षा का मुख्य महत्व मूल्य शिक्षा के क्रियान्वयन और इसकी महत्ता के अलग करने पर प्रकाश डाला गया है। यह 'अर्थ' की भावना को पीछे छोड़ देता है, जो किसी को करना है और इस प्रकार व्यक्तित्व विकास में सहायता करता है।

मूल्य शिक्षा के उद्देश्य ध्आवश्यकता - समकालीन दुनियां में मूल्य शिक्षा का महत्व कई गुना है। हमारे लिए यह जानना आवश्यक हो जाता है कि मूल्य शिक्षा एक स्कूली बच्चे की यात्रा में शामिल है और उसके वाद भी यह सुनिश्चित करने के लिए कि वे नैतिक मूल्यों के साथ -साथ नैतिकता को भी आत्मसात करे।

मूल्य शिक्षा की प्रमुख आवश्यकता निम्नलिखित है :

1. शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक पहलुओं के सन्दर्भ में बच्चे के व्यक्तित्व विकास के लिए एक सभी दृष्टिकोण सुनिश्चित करना।
2. देशभक्ति की भावना के साथ -साथ एक अच्छे नागरिक के मूल्यों में वृद्धि करना।
3. छात्रों के सामाजिक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भाईचारे के महत्व को समझने मे मदद करना।
4. अच्छे शिष्टाचार और जिम्मेदारी एवं सहकारिता का विकास करना।
5. रूढ़िवादी विवरण की ओर जिज्ञासा और जिज्ञासा की भावना को वढ़ावा देना।
6. नैतिक सिद्धांतो के आधार पर ध्वनि निर्णय लेने के तरीके के वारे में छात्रों को सीखना।
7. सोच और जीने के लोकतान्त्रिक तरीके को वढ़ावा देना।
8. सहनशिलता और विभिन्न सास्कृतियों एवं धार्मिक विश्वासो के प्रति सम्मान के साथ छात्रों को लागू करना।

निष्कर्ष एवं सुझाव- उपरोक्त चर्चा के आधार पर आज की शिक्षा प्रणाली में मूल्यों एवं अन्य आवश्यक कौशलों के संतुलित पाठ्यक्रम की आवश्यकता है। इसलिए, आज के संदर्भ में मूल्य शिक्षा की आवश्यकता पर अधिक जोर नहीं दिया जा सकता है। इसलिए, शिक्षा का उद्देश्य न केवल व्यक्ति के आर्थिक उत्थान के माध्यम से बल्कि सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक मजबूती के माध्यम से मानव जीवन को बेहतर बनाना होना चाहिए। इससे न केवल मानव जीवन में सुधार होगा बल्कि 'उच्च सत्य' का भी एहसास होगा। युवाओं के सशक्तिकरण की दिशा में एक पहल के रूप में मूल्य शिक्षा पर अध्ययन छात्रों के व्यक्तित्व और उनके वर्तमान और भविष्य के जीवन में सकारात्मक अंतर लाने में मूल्य शिक्षा की भूमिका को समझने का एक प्रयास है। अध्ययन से पता चला है कि मूल्य-शिक्षा कार्यशालाओं के माध्यम से छात्रों को जो अनुभव प्राप्त हुआ है, उससे उन्हें अनुशासन और नैतिक ईमानदारी के मूल्य को समझने में मदद मिली है। उन्होंने एक बेहतर टीम भावना विकसित की है, अपने आत्मविश्वास के स्तर को बढ़ाया है, एकाग्रता की शक्ति में सुधार किया है और बेहतर पारस्परिक संबंध बनाए हैं। इससे उन्हें संवेदनशील इंसान के रूप में विकसित होने में मदद मिली है और वे जीवन की चुनौतियों का प्रभावी ढंग से सामना करने में सक्षम हुए हैं। छात्रों ने इन समृद्ध अनुभवों के माध्यम से बहुत कुछ हासिल किया है और स्पष्टता, साहस और संयम के साथ गतिशील वातावरण की अनिश्चितताओं का सामना करने के लिए सशक्त हुए हैं। मूल्य शिक्षा के समग्र दृष्टिकोण ने यह सुनिश्चित किया है कि छात्रों के व्यक्तित्व के सभी आयामों का संतुलित विकास हो। आध्यात्मिक और नैतिक शिक्षा वह शक्तिशाली शक्ति है जो व्यक्ति को मजबूत और दृढ़ बनाती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020, (एक विहग अवलोकन, म. प्र. हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल।
2. अवस्थी, डी. (2014), मूल्य आधारित शिक्षा ही भारत के युवाओं में नैतिक मूल्यों के संकट की समस्या का एकमात्र समाधान है। जीजेआरए - शोध विश्लेषण के लिए वैश्विक पत्रिका। एक शोध पत्र, खंड 3 अंक 9 सितंबर, 2014 आईएसएसएन संख्या 2277-8160।
3. अनेजा, एन. (2014), वर्तमान शिक्षा प्रणाली में मूल्य शिक्षा का महत्व और शिक्षक की भूमिका। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइंस एंड ह्यूमैनिटीज रिसर्च आईएसएसएन 2348-3164 (ऑनलाइन) वॉल्यूम। 2, अंक 3, पीपी: (230-233), महीनारू जुलाई 2014 - सितंबर 2014।
4. लीचसेनरिंग, ए. (2010),2000 के दशक में स्कूलों में मूल्य आधारित शिक्षा: ऑस्ट्रेलियाई अनुभव। क्वींसलैंड प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय: ऑस्ट्रेलिया। एक अप्रकाशित मास्टर की थीसिस।
5. यादव, यू. एवं सैनी, एम (2016), नैतिक नैतिक मूल्य और भारतीय शिक्षा प्रणाली। XVII वार्षिक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी कार्यवाहीय जनवरी, 2016 आईएसबीएन संख्या से लिया गया।

6. https://www.linkedin.com/pulse/connection-between-values-education-21st-century-skills-izehi-anuge/
7. https://eduedify.com/importance-of-value-education/
8. https://www.capstonecore.com/the-value-of-a-21st-century-education/
9. https://www.iberdrola.com/talent/value-education/
10. http://www.internationalseminar.in/XVII_AIS/INDEX.HTM.Urmila_yadav.pdf/

****